Emotional Development

संवेगात्मक विकास

Adolescence is a period of stress and storm - G. Stanley Hall.

किशोरावस्था आंधी तथा तनाव की अवस्था है – जी. स्टेनले हॉल

The word **'Emotion'** is derived from a Latin word **'emovere'** which means **'to excite'**. Emotion is a complex situation in which some bodily reactions like the change in heartbeat, blood pressure, breathing speed, working of different endocrine glands takes place along with remarkable changes in some external organs like hands, legs, eyes, face etc. Normally an emotion contains a feeling of something pleasant or unpleasant.

संवेग (**'Emotion'**) शब्द लैटिन भाषा के शब्द **'emovere'** से बना है जिसका अर्थ **'उत्तेजित करना'** होता है। संवेग एक जटिल अवस्था होती है जिसमें कुछ आंगिक प्रतिक्रियाएं जैसे हृदय की गति में परिवर्तन, रक्तचाप में परिवर्तन, साँस की गति में परिवर्तन, विभिन्न अंतः स्त्रावी ग्रंथियों के कार्यों में परिवर्तन तथा शरीर के बाहरी अंगों जैसे हाथ, पैर आँख, चेहरा आदि में भी परिवर्तन होता है। सामान्यतः किसी भी संवेग में सुखद या दुखद के भाव की अनुभूति पाई जाती है।

The Pattern of Emotional Development

First of all **J.B. Watson** describes that a child has three inborn and primary emotions.
Fear – By Loud Noise or removing any support.
Anger – By any kind of Physical restraint.
Love – By titillating or patting.

In 1932 **Bridges,** a lady psychologist described that till the age of 24 months all types of emotions have developed in a child.

- ✓ At the age of **3 months**, two types of emotions i.e. **Delight** and **Distress** occur in the child.
- ✓ At the age of **6 months Fear**, **Disgust** and **Affection** occur from distress.
- ✓ At the age of **12 months**, **Elation** and **Affection** develop from delight.
- ✓ At the age of **18 months Jealousy** develops from distress and Affection further divided into affection for adults and affection for children.
- ✓ At the end, **Joy** develops from delight at the age of **24 months**/2 years.

As the age of the child increases, his/her

संवेगात्मक विकास का पैटर्न

सर्वप्रथम **वॉटसन** ने बताया कि शिशुओं में तीन जन्मजात तथा मौलिक संवेग होते हैं।
भय - तीव्र आवाज या किसी प्रकार के समर्थन को हटा लेने से।
क्रोध - शारीरिक क्रियाओं में बाधा उत्पन्न होने पर।
प्यार - त्वचा को सहलाने या थपथपाने से।

ब्रिजेज ने 1932 में बताया कि 24 महीने की उम्र तक शिशुओं में सभी प्रकार के संवेगों का विकास हो जाता है।

- ✓ **3 महीने** की आयु में बालक में **दुख** तथा **आनन्द** के संवेग उत्पन्न होते हैं।
- ✓ **6 महीने** की आयु में दुख से तीन विशेष प्रकार के संवेग - **भय, घृणा** तथा **क्रोध** उत्पन्न होते हैं।
- ✓ **12 महीने** की आयु में आनंद से **उल्लास** तथा **अनुराग** की उत्पत्ति होती है।
- ✓ **18 महीने** की आयु में दुख के संवेग से **डाह (ईर्ष्या)** का संवेग उत्पन्न होता है तथा अनुराग विशिष्ट होकर व्यस्कों तथा बालकों के प्रति अनुराग में बंट जाता है।
- ✓ सबसे अंत में **24 महीने**/2 वर्ष की आयु में आनन्द के संवेग से **हर्ष** की उत्पत्ति होती है।

emotions become more intense, sharp and clear. Motor responses (clapping, jumping, laughing) decreases and linguistic responses increases.

According to Skinner, controlling/balancing the emotions in one stage prevents the emotional imbalances in coming stages.

Effect of Emotionality upon learners

Positive Effects

1. Emotions prepare the body for action.
2. Emotions serve as a Source of Communication.
3. Emotions are Sources of Social Evaluation and Self-Evaluation.
4. Emotions affect social interactions.
5. Emotional responses help in developing habits among children. We repeat only pleasant feelings.

Negative Effects

1. Emotional Tension disrupts motor skills like playing, writing, speaking (dysphemia), running, etc.
2. Emotions produce physiological changes – Intense emotions affect digestive process (constipation, diarrhoea). It also causes some behavioural problems like Sleeping Disturbances, Intense-Anger Problem, Nail-Biting, Bedwetting, Masturbation, Crying Loudly etc.
3. Emotions produce adverse effects on intellectual efficiency – Emotional frustrations cause the lack of concentration which results in mentally weak like symptoms in the child.
4. Development of Special Attitude – It may result in Timidity, Irritability, Withdrawal Tendency or Aggressiveness.

Methods of handling problems of Emotional Development

1. To understand background factors of

जैसे-जैसे बालक की उम्र बढ़ती है उसके संवेग अधिक तीव्र, तीक्ष्ण तथा स्पष्ट होते जाते हैं। क्रियात्मक अनुक्रिया (ताली बजाना, हंसना, कुदना उछलना) धीरे-धीरे घटती चली जाती है तथा भाषायी अनुक्रिया का प्रयोग बढता चला जाता है।

स्किनर के अनुसार किसी अवस्था के संवेगों को अच्छी तरह से नियंत्रित कर देने से आने वाली अवस्थाओं में संवेगात्मक असंतुलन पैदा नहीं होता।

संवेगात्मकता का शिक्षार्थी पर प्रभाव

धनात्मक प्रभाव

1. संवेग शरीर को कार्य करने के लिए उत्तेजित करते हैं।
2. संवेग संचार का एक माध्यम है।
3. संवेग सामाजिक मुल्यांकन तथा आत्म-मुल्यांकन का एक माध्यम होता है।
4. संवेग द्वारा सामाजिक अंतः क्रियाएं प्रभावित होती हैं।
5. सांवेगिक अनुक्रियाओं के आधार पर बालकों में आदत का निर्माण होता है। हम केवल सुखद भाव को दोहराते हैं।

ऋणात्मक प्रभाव

1. संवेगात्मक तनाव बालकों में क्रियात्मक कौशल जैसे खेलना, लिखना, बोलना (हकलाना तुतलाना), दौडना, आदि को नष्ट कर देता है।
2. संवेग बालकों में शारीरिक परिवर्तन उत्पन्न करता है - तीव्र संवेग सामान्य पाचन क्रियाओं को प्रभावित करता है (कब्ज, डायरिया)। इससे व्यावहारात्मक समस्याएं जैसे नींद की गड़बड़ी, तीव्र क्रोध आ जाने की समस्या, नाखुन काटना, बिछावन में पेशाब करना, हस्तमैथून, चिल्ला चिल्लाकर रोने की आदत, आदि उत्पन्न हो सकती हैं।
3. संवेग बालकों की बौद्धिक दक्षता पर कुप्रभाव डालता है - सांवेगिक विपत्तियाँ/कुंठा से एकाग्रता में कमी आदि आ सकते हैं जिससे बालक में मानसिक मंदता जैसे लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं।

4. विशिष्ट मनोवृति का विकास - इससे सामान्य समायोजन में कठिनाई होती है जैसे कायरता, चिड़चिड़ापन, लोगों से कटे-कटे रहने की प्रवृति, आक्रामकता आदि।

सांवेगिक विकास की समस्याओं को दूर करने की विधियाँ

1. सांवेगिक समस्याओं की पृष्ठभूमि कारकों को समझना।
2. शिक्षकों को वस्तुनिष्ठ आवेष्टन - शिक्षक को आपा नहीं खोना चाहिए।
3. सुखद सांवेगिक अनुभूतियों को उत्पन्न करना - अध्यापक

emotional problems. **2**. Objective Involvement of teachers – Teacher must not lose his/her patience. **3**. Fostering pleasant emotional experiences – Teacher should identify the aptitude of student and then teach accordingly. **4**. Emotional **Catharsis** – Some emotions may remain buried inside the child which slowly keeps on affecting his/her personality and accordingly the development. The process of drawing out these buried emotions and frustrations is called **Catharsis**. We can accomplish it by diverting the child's mind in some other recreational, creative or aesthetic work.	को विद्यार्थी की अभिरूचि को पहचानकर उसके अनुसार ही पढ़ाना चाहिए। **4**. सांवेगिक **भाव-विरेचन** - बालक के मन में कोई संवेग दबा रह सकता है जो धीरे-धीरे उसके व्यक्तित्व व विकास को प्रभावित करता रहता है। इन भीतर छिपे सांवेगिक घुटन एवं शक्तियों को बाहर निकालने की प्रक्रिया को सांवेगिक विरेचन कहते है। बालक को किसी दूसरे मनोरंजनात्मक, कलात्मक तथा सौंदर्यात्मक कार्य में लगाकर तथा किसी तुच्छ घटना या वस्तु के प्रति सांवेगिक विस्फोट करवाकर यह किया जा सकता है।

EduBull.com